UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 13 गुरु गोविन्द सिंह (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

गुरु तेगबहादुर के पुत्र तथा उत्तराधिकारी गुरु गोविन्द सिंह का जन्म सन् 1666 ई० में पटना (बिहार) में हुआ। उन्हें दस वर्ष की अवस्था में गुरु की गद्दी मिली। वे सैनिकों की भाँति घुड़सवारी करते और तलवार चलाते थे। इतना ही नहीं कुछ राजकाज भी होने लगा। इनके शिष्य इन्हें भेट देते थे। इनके शिष्य तथा दरबारी उन्हें 'सच्चे बादशाह' कहते थे। गुरु गोविन्द सिंह: सिखों के आग्रह पर आनन्दपुर आ गए जो गुरु तेगबहादुर की राजधानी थी। यहाँ 20 वर्ष तक रहकर धर्मग्रन्थों , को अध्ययन किया। ये अच्छे कवि और विचारक थे। इनके द्वारा रचित 'चंडी-चरित्र' और 'चंडी का वार' वीररस के सुन्दर काव्य हैं। इन्होंने एक पुस्तक 'विचित्र नाटक' भी लिखी, जिसके द्वारा लोगों में . उत्साह भरने की चेष्टा की।

सन् 1699 ई० में बैसाखी के दिन इन्होंने खालसा पंथ अथवा सिख धर्म की स्थापना की। गुरु गोविन्द सिंह ने सिखों को पाँच वस्तुओं को धारण करना जरूरी बताया। ये वस्तुएँ हैं–

1. केश,
2. कड़ा
3. कंघा,
4. कच्छा और
5. कृपाण ये 'पाँच ककार' कहे जाते हैं।

गुरु ने अपने शिष्यों से जाति सूचक शब्द छोड़कर प्रत्येक सिख के नाम के साथ 'सिंह' जोड़ना जरूरी समझा। इस प्रकार सिख संगठित सैनिक बन गए। इससे औरंगजेब, जो दक्षिण में था, ने गुरु पर आक्रमण करने का आदेश दिया। गुरु अपने कुछ साथियों सहित बच निकले। गुरु औरंगजेब से छह-सात वर्ष तक युद्ध करते रहे। इन युद्धों में उनके दो पुत्रे मारे गए और दो को सरहिंन्द के सूबेदार ने दीवार चिनवा दिया। गुरु ने फिर भी साहस और धैर्य नहीं छोड़ा। औरंगजेब ने गुरु को कैद करने का आदेश दिया लेकिन इसी बीच औरंगजेब की मृत्यु हो गई।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने 42 वर्ष के अल्प जीवन में अनेक कार्य किए। भेद-भाव मिटाकर और खालसा पंथ को संगठित करके उन्होंने देशवासियों को नई स्फूर्ति और प्रेरणा दी। नि:सन्देह वे हमारे देश के अमूल्य रत्न थे।

https://www.evidyarthi.in/